6. मूल-प्रवृत्तियों पर आधारित व्यवहार - शिशु के अधिकांश व्यवहार का आधार उसकी मूल-प्रवृत्तियाँ होती हैं। यदि उसको किसी बात पर क्रोध आ जाता है, तो वह उसकी अपनी वाणी या क्रिया द्वारा व्यक्त करता है। यदि उसे भूख लगती है, तो उसे जो भी वस्तु मिलती है उसी को अपने मुँह में रख लेता है।

7. नैतिकता का अभाव - शिशु को अच्छी और बुरी, उचित और अनुचित बातों का ज्ञान नहीं होता है। वह उन्हीं कार्यों को करता है, जिनमें उसको आनन्द आता है, भले ही वे अवाञ्छनीय हो। इस प्रकार उसमें नैतिकता का पूर्ण अभाव होता है।

8. सामाजिक भावना का विकास - इस अवस्था के अंतिम वर्षों में शिशु में सामाजिक भावना का विकास होता है।

वैलेनटाइन का मत है - "चार या पाँच वर्ष के बालक में अपने छोटे भाइयों, बहनों या साथियों की रक्षा करने की प्रवृत्ति होती है। वह 2 से 5 वर्ष तक के बच्चों के साथ खेलना पसन्द करता है। वह अपनी वस्तुओं में दूसरों को साझीदार बनाता है। वह दूसरे बच्चों के अधिकारों की रक्षा करता है और दुःख में उनको सांत्वना देने का प्रयास करता है।"

9. दूसरे बालकों में रुचि या अरुचि - शिशु में दूसरे बालकों के प्रति रुचि या अरुचि उत्पन्न

Scanned with CamScanner

-हो जाती है। इस सम्बन्ध में स्किनर ने लिखा है कि- "बालक एक वर्ष का होने से पूर्व ही अपने साथियों में रुचि व्यक्त करने लगता है। आरम्भ में इस रुचि का स्वरूप अनिश्चित होता है, पर शीघ्र ही यह अधिक निश्चित रूप धारण कर लेती है और रुचि एवं अरुचि के रूप में प्रकट होने लगती है।"

10- संवेगों का प्रदर्शन- शिशु में जन्म के समय 'उत्तेजना' के अलावा और कोई संवेग नहीं होता है। ब्रिजेज [Bridges] ने सन् 1932 में अपने अध्ययनों के आधार पर घोषित किया कि दो वर्ष की आयु तक बालक में लगभग सभी संवेगों का विकास होता है। बाल-मनोवैज्ञानिकों ने शिशु में मुख्य रूप से चार संवेग माने हैं- भय, क्रोध, प्रेम और पीड़ा।

11- काम- प्रवृत्ति- बाल-मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि शिशु में काम-प्रवृत्ति बहुत प्रबल होती है, पर वयस्कों के समान वह उसको व्यक्त नहीं कर पाता है। वह माँ का स्तनपान करता है और यौनागों पर हाथ रखना बालक की काम-प्रवृत्ति की सूचक है।

12- जिज्ञासा की प्रवृत्ति- शिशु में जिज्ञासा की प्रवृत्ति का बाहुल्य होता है। वह अपने खिलौने का विभिन्न प्रकार से प्रयोग करता है। वह उसे फर्श पर

Scanned with CamScanner

फेंक सकता है, उसके भागों को अलग-अलग कर सक ता है। इस प्रकार की क्रियाओं द्वारा वह अपनी जिज्ञास को सन्तुष्ट करने की चेष्टा करता है। इसके अति- रिक्त, वह विभिन्न बातों और वस्तुओं के बारे में 'क्यों' और 'कैसे' के प्रश्न पूछता है।

13. अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति- शिशु में अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति होती है। वह अपने माता-पिता, भाई-बहन आदि के कार्यों एवं व्यवहा -र का अनुकरण करता है। यदि वह ऐसा नहीं कर पाता है तो रोकर या चिल्लाकर अपनी असमर्थता प्रकट करता है। अनुकरण द्वारा सीखने की प्रवृत्ति उसे अपना विकास करने में सहायता देती है।

14. अकेले व साथ खेलने की प्रवृत्ति- शिशु में पहले अकेले और फिर दूसरों के साथ खेलने की प्रवृत्ति होती है। इस प्रवृत्ति में होने वाले परिवर्तन का वर्णन करते हुए को एवं को ने लिखा है- "बहुत ही छोटा शिशु अकेला खेलता है। धीरे -धीरे वह दूसरे बालकों के समीप खेलने की अवस्था में से गुजरता है। अन्त में, वह अपनी आयु के बालकों के साथ खेलने में महान आनन्द का अनुभव करता है।"

Scanned with CamScanner